# आप में और भी बहुत कुछ है

More in You

## उद्देश्य (OBJECTIVE)

बहुत से विश्वासी और अगुवा ऐसे सीमित दृष्टिकोण में जीते हैं जो उनकी **सच्ची आत्मिक सामर्थ्य और बुलाहट** को दबा देता है।
यह प्रशिक्षण इस सच्चाई पर ध्यान देता है कि **परमेश्वर ने हमारे अंदर उससे कहीं अधिक डाला है**, जितना हम सोचते हैं या वर्तमान में उपयोग कर रहे हैं।

यह सिखावन हमें बुलाता है कि हम आत्म-निर्भरता को त्यागें और **आत्मिक सामर्थ्य, विश्वास, और परमेश्वर के उद्देश्यों में प्रवेश करें**।

---

## सारांश (OVERVIEW)

- मसीही अगुवों में अक्सर "मैं पर्याप्त नहीं हूँ" की मानसिकता होती है
- परमेश्वर आपके अंदर **उससे अधिक रखता है** जितना आपने अभी देखा है
- शास्त्रों में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ लोग अपनी कमजोरी के बावजूद परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त हुए
- हमें जरूरत है:
    - **विश्वास** से देखने की
    - परमेश्वर के **वचन** के अनुसार जीने की
    - **पुरानी सोच और सीमाओं** को तोड़ने की
- परमेश्वर आपसे कहता है: "मैंने तुममें और भी बहुत कुछ रखा है"
- जब आप विश्वास में कदम उठाते हैं, तो आप पाते हैं कि **परमेश्वर की सामर्थ्य आप में कार्य कर रही है**

---

## संदर्भित बाइबल वचन (VERSES REFERENCED)

- इफिसियों 3:20
- 2 तीमुथियुस 1:6-7
- नीतिवचन 4:23
- भजन संहिता 139:13-14

---

## अध्ययन के लिए प्रश्न (QUESTIONS FOR FURTHER STUDY)

1. आप किन क्षेत्रों में स्वयं को सीमित मानते हैं जबकि परमेश्वर ने उनमें सामर्थ्य रखी है?

2. क्या कोई ऐसा झूठ है जिसे आप अपने बारे में मानते आए हैं, जिसे अब **परमेश्वर के सत्य** से बदलना चाहिए?

3. आप में जो "और भी बहुत कुछ" है, उसे बाहर लाने के लिए आप कौन-से व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?

4. आपकी अगुवाई और सेवकाई को परमेश्वर कैसे **नई दृष्टि और साहस** से भर रहा है?

---

## अधिक अध्ययन के लिए वचन पद (SCRIPTURE FOR FURTHER STUDY)

- यहूदी 1:24-25
- रोमियों 8:37-39
- यिर्मयाह 29:11